राग देवगंधारी

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में देवगंधारी के अर्न्तगत देवगंधारी व देवगंधार दो राग उपलब्ध होते हैं। देवगंधार का केवल एक शब्द ''अपुने हरि पहि बिनती कहीए'' है। बाकी सारी बाणी देवगंधारी में है। उपरोक्त दोनों राग अलग–अलग स्वरुप रखते हैं। देवगंधारी का स्वरूप गुरमति संगीत के बिना भारती संगीत में अभी तक प्रचलित नहीं हुआ। इस राग में विचरण करते पता लगेगा कि खुशी प्रभु चरण–शरण में है। झूठा संसारी प्यार छोड़ने में है।

आरोह – स रे म, प ध सं।

अवरोह – सं नी ध प, म प, ध़ नी ध़ प, म ग रे स।

स्वर – दोनों धैवत, दोनों निषाद, आरोह में 'ग' व 'नी' वर्जित, अन्य शुद्ध।

थाट – बिलावल–(आसावरी अंग)

जाति – औड़व–सम्पूर्ण

समय – दिन का द्वितीय प्रहर

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

मुख्य अंग – ध़ नी ध़ प, म ग, स रे म, ग स रे ग स।

स्वर विस्थार –

1. स रे म, ग रे स, नी़ ध़ प़, ध़ नी़ ध़ प़, प़ ध़ प़, स, रे स, रे म म प, म प ध़ म प, ध़ नी ध़ प, म प म, ग रे स।
2. म, म प ध़ प, ध़ नी ध़ प, म प ध़, प ध सं, रें सं, रें गं सं, सं रें मं, गं रें गं सं, नी ध प, ध़ नी ध़ प, म ग स रे म, ग रे स।

देवगंधारी महला ९॥ (५३६)

जगत मै झूठी देखी प्रीति॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत॥१॥रहाउ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत॥ अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति॥१॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत॥ नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

देवगंधारी महला ५॥ (५३२)

तेरा जनु राम रसाइणि माता॥ प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता॥१॥रहाउ॥ बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता॥ अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता॥१॥ सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता॥ सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥२॥२१॥

राग देवगंधारी

(1) ताल झपताल

LFkkbZ

ध	नी	ध	–	प	म	ग	स	–	रे
ज	ग	त	0	मै	झू	0	ठी	0	0
म	–	म	रे	म	प	–	ध	–	प
दे	0	खी	0	0	प्री	0	ति	0	0
स	रे	म	–	म	प	–	प	प	–
अ	प	ने	0	0	ही	0	सु	ख	0
म	ग	स	–	रे	ग	रे	स	–	स
सि	उ	स	0	भ	ला	0	गे	0	0
म	प	ध	–	–	सं	सं	सं	सं	सं
कि	आ	दा	0	0	रा	0	कि	आ	0
नी	–	ध	–	प	म	प	ध	–	प
मी	0	0	0	0	0	0	त	0	0
X		2			0		3		

vUrjk

म	प	धध	ध	ध	सं	–	संसं	सं	सं
मे	0	रउ	0	0	मे	0	रउ	0	0
नी	ध	प	–	ध	सं	सं	सं	–	सं
स	भै	0	0	क	ह	त	है	0	0
ध	ध	सं	–	रें	गं	–	सं	सं	सं
हि	त	सि	0	उ	बा	0	धि	–	ओ
नी	–	ध	–	प	म	प	ध	–	प
ची	0	0	0	0	0	0	त	0	0
X		2			0			3	

इस बंदिश का अन्तिम अंतरा तीन ताल में गायन किया है।

								ध	नी	ध	प	म	ग	स	रे
								ज	ग	त	मै	झू	0	ठी	0
म	–	रे	म	प	–	ध	प								
दे	0	खी	0	प्री	0	ति	0								
X				2				0				3			

vrjk%

								म	–	प	ध	सं	सं	सं	सं
								ना	0	न	क	भ	उ	ज	लु
नी	ध	प	ध	सं	–	–	सं	संसं	ध	सं	–	गं	गं	सं	–
पा	0	रि	प	रै	0	0	0	जउ	गा	वै	0	प्र	भ	के	0
नी	–	ध	प	म	प	ध	प								
गी	0	0	0	0	0	त	0								
X				2				0				3			

dhrudkj Hkkbl xjno flg cVkyk

राग देवगंधारी

(2) तीन ताल

LFkkbZ%

											पध	नी	धप	म	म
											ते0	0	रा0	ज	नु
प	–	प	–	म	ग	रे	ग	रे	–	स					
रा	0	म	0	र	सा	इ	णि	मा	0	ता					
X				2				0				3			

vrjk%

								म	–	प	ध	सं	–	सं	सं
								प्रे	0	म	र	सा	0	नि	धि
नी	–	नी	सं	नी	ध	प	–	पध	नी	ध	प	म	म	म	–
जा	0	क	उ	उ	प	जी	0	छो0	0	डि	न	क	त	हू	0
प	–	म	ग	रे	–	स	–	–	–	–					
जा	0	0	0	ता	0	0	0	0	0	0					
X				2				0				3			

dhrudkj Hkkbl fnyckx flg] xyckx flg ckny